एक परिचय

विलियम डी. पो लिखता है, ''संसार में सबसे महत्वपूर्ण बात जो नौजवानों को सज्य बनाती है वे अच्छे बूढ़े लोग हैं।''[1] ऐसे ही, नौजवान सुसमाचार प्रचारकों को आत्मिक और मजबूत बनाने के लिए सच्चाई की ताकत की सबसे अच्छी दवा किसी बुज़ुर्ग प्रेरित का परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया संदेश ही है! तीमुथियुस ने पौलुस के पहले पत्र को अवश्य ही कई बार पढ़ा होगा। उसका जिसे इस पत्र में ''परमधन्य और अद्वैत अधिपति और राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु'' (6:15) के रूप में वर्णित किया गया है, सही प्रतिनिधित्व वही सुसमाचार प्रचारक करेगा, जो तीमुथियुस की तरह समझदारी से काम करता है। पृथ्वी पर रहने वाले सुसमाचार प्रचारकों के नाम, जिन्होंने स्वर्ग या नरक में अनन्तकाल का समय बिताने वाले लोगों के साथ पृथ्वी पर रहना है यह एक स्वर्गीय संदेश है। उसके काम की प्रकृति और भविष्य का अवसर उसे अध्ययन या सेवा करने में उदासीन होने की अनुमति नहीं देती। हर सुसमाचार प्रचारक को भजन लिखने वाले के साथ यह कहना आवश्यक है, ''तेरी दी हुई व्यवस्था मेरे लिए हजारों रुपयों और मुहरों से भी उज़म है'' (भजन संहिता 119:72)।

उद्देश्य

तीमुथियुस के नाम पौलुस की पहली पत्री का मुज़्य उद्देश्य जवान सुसमाचार प्रचारक को ''विश्वास ... की बातों से, पालन - पोषण'' करके खरी शिक्षा में बने रहने में सहायता करना था (4:6; यहूदा 3 भी देखें)। पौलुस ने उसे कुछ लोगों को ''और प्रकार की शिक्षा न देने और उन ऐसी कहानियों और अनन्त वंशावलियों पर मन न'' लगाने का निर्देश दिया (1:3ख, 4क)। उसे ''अशुद्ध और बूढ़ियों की सी कहानियों से अलग'' रहने (4:7) और किसी भी ऐसे व्यज़्ति का सामना करने के लिए कहा गया जो ''उस उपदेश की बातों को नहीं मानता'' (6:3)।

यह पत्री केवल उपदेश से ही नहीं बल्कि किसी के चाल चलन से भी सज़्बन्धित है। यह पत्री एक सुसमाचार प्रचारक को अगुआई देने के लिए लिखी गई कि ''परमेश्वर का घर जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है, और जो सत्य का खज़्भा, और नेव है; उस में कैसा बर्ताव करना चाहिए'' (3:14, 15)।

पौलुस ने इस पत्री में उन लोगों के बारे में भी एक गंभीर चेतावनी दी है जिन्होंने विश्वास से फिर जाना था। कइयों का तो पहले ही ''विश्वास रूपी जहाज़ डूब गया'' था

(1:18-20)। विशेषकर, कुछ महिलाओं ने अपने पहले वाले विश्वास को त्याग दिया था (5:12)। कई लोग झूठी कहानियों और असत्य के विरोधों अर्थात झूठ - मूठ के ज्ञान के कारण ''विश्वास से भटक गए'' थे (6:20, 21)। पौलुस के अनुसार, कइयों ने भविष्य में भटक जाना था (4:1-3)।

इसलिए तीमुथियुस के साथ - साथ सभी सुसमाचार प्रचारकों से आग्रह किया गया है कि वे ''विश्वास में सच्चे पुत्र'' (1:2) होने के कारण ''इस थाती की रखवाली'' करें (6:20)। सुसमाचार प्रचारकों के लिए यह सचमुच में एक उपयोगी, व्यावहारिक और उज़्दा पत्री है।[2]

प्राप्तकर्ता

इस जवान सुसमाचार प्रचारक के बारे में, जिसके नाम पौलुस ने यह पत्री लिखी थी हम ज़्या जानते हैं ? पौलुस ने तीमुथियुस को ''विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र'' (1:2) और ''प्रिय पुत्र तीमुथियुस'' कहा (2 तीमुथियुस 1:2)। पौलुस द्वारा स्नेहपूर्ण, विश्वास से जुड़ी ये अभिव्यज़्तियां हमें एक ऐसे व्यज़्ति का परिचय देती हैं जो पौलुस के सबसे प्रिय सहकर्मियों में से एक था। ''तीमुथियुस एक बहुत ही बढ़िया व्यज़्ति था ... उसका स्वभाव *मिलनसार* और विश्वासयोग्य था ... पौलुस तीमुथियुस से प्रेम करता था और उसके व्यज़्तित्व के गुणों की सराहना करता था।''[3]

तिथि और समय

इस प्रश्न का उज़र देने के लिए कि यह पत्री कहां और कब लिखी गई थी, पौलुस के इस पत्री के लिखने से लेकर उसकी मृत्यु तक के उसके बाकी जीवन और यात्राओं को ध्यान में रखना ठीक रहेगा। प्रेरितों के काम में लूका द्वारा दिए गए पौलुस के जीवन के विवरण में पौलुस द्वारा तीमुथियुस के नाम दो और तीतुस के नाम एक पत्री में यात्राओं का ज़्यौरा नहीं दिया गया है। मेरल सी. टैनी[4] ने तीमुथियुस और तीतुस के नाम पत्रियों में उल्लेखित घटनाओं के साथ - साथ प्रेरितों के काम की पौलुस की यात्रा के ढंग की भी बहुत अच्छी तुलना की है। प्रेरितों के काम के अनुसार, मकिदुनिया जाते समय तीमुथियुस पौलुस को इफिसुस के निकट नहीं छोड़ पाया था (1:3; देखिए प्रेरितों 20:4-6)। फिलेमोन 24 में देमास को पौलुस का एक सहकर्मी बताया गया है, परन्तु 2 तीमुथियुस 4:10 तक वह उसे छोड़ चुका था। लूका लिखित किताब प्रेरितों के काम के अनुसार पौलुस क्रेते में नहीं गया था, जो कि तीतुस 1:5 के अनुसार उसकी यात्रा का मार्ग था। टैनी ने अतिरिज़्त दिलचस्प तुलनाएं भी की हैं। थियोडोर ने यह प्रश्न उठाया है कि ''यदि पौलुस रोम में [जेल में] ही रह रहा था तो वह अपनी यात्रा पूरी होने की बात कैसे कह सकता था'' (जैसे प्रेरितों 28 अध्याय में) ज़्योंकि उसकी इच्छा स्पेन जाने की थी (देखें रोमियों 15:24-28; 2 तीमुथियुस 4:7, 8) ?[5]

यदि हम एक घटना को अनुमति दें कि लूका द्वारा प्रेरितों के काम के वर्णन के बाद

पौलुस जेल से छूट गया था तो छोटी - छोटी बातें एक ही जगह इकट्ठी हो जाती हैं। फिर उसके लिए रोम में दोबारा जेल होने से पहले अपनी दौड़ जारी रखना और पूरा करना सज़्भव था, जहां उसने वास्तव में संसार का अपना सफ़र पूरा किया था।

नीचे दिया गया सर्वेक्षण रोम में पौलुस के पहले कारावास से आरज़्भ करके उसकी मृत्यु के समय के निकट तक उसकी यात्रा के मार्ग का पता लगाने का प्रयास है। परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया पवित्र शास्त्र उसके प्रत्येक ठिकाने का उल्लेख नहीं करता है। इसलिए, यह जानकारी उस भाग से जोड़ने के लिए है जो हमें बाइबल से मिलता है, परन्तु यह पूरी चौकसी से है कि ''खाली स्थान'' वाले प्रयास मनुष्य के हैं जिनमें गलती की गुंजाइश रहती है।

पौलुस का जेल से छूटना पवित्र शास्त्र की किसी भी बात के विपरीत नहीं है। लूका ने यह दावा नहीं किया कि प्रेरितों के काम की पुस्तक पौलुस की मृत्यु तक लिखी जा रही थी (प्रेरितों 28:30, 31)। पौलुस ने संकेत दिया कि उसने जेल से छूटने का पूर्वानुमान लगा लिया था (देखें फिलिप्पियों 2:24)। उसने तो फिलेमोन से अपने रहने के लिए जगह तैयार करने को भी कह दिया था (फिलेमोन 22)। *जेल से छूटने के बाद पौलुस कहां गया था?* नीचे दी गई जानकारी उन घटनाओं की कड़ी को जोड़ने का एक प्रयास है।

1. जैसे ही पौलुस को पता चला कि उसके साथ ज़्या होने वाला है, उसने तीमुथियुस को फिलिप्पी की ओर रवाना कर दिया था (फिलिप्पियों 2:19-23)।
2. पौलुस छूट गया था और एशिया माइनर और मकिदुनिया की अपनी पूर्व प्रस्तावित यात्रा पर चल पड़ा था। रोम से जाते हुए, पौलुस क्रेते में आया, जहां उसने तीतुस को छोड़ा था (तीतुस 1:5)।
3. अपनी यात्रा को जारी रखते हुए, वह फिलेमोन से मिलने और उनेसिमुस के बारे में बात करने के लिए एशिया माइनर में आया (फिलेमोन 10-22)। यह कुलुस्से की बात है (कुलुस्सियों 4:9)। कुलुस्से को जाते हुए वह मिलेतुस से (इफिसुस के निकट) आसानी से चला गया।
4. पौलुस मिलेतुस में लौट गया, जहां वह तीमुथियुस से मिला (जो पौलुस के आग्रह से फिलिप्पी में गया था), और फिर वह इफिसुस को चला गया (शायद रास्ते में त्रोआस में रुककर)। प्रेरितों 20:25 के कारण मिलेतुस में (इफिसुस की तुलना में) पौलुस द्वारा तीमुथियुस से मिलने को प्राथमिकता दी जाती है। पौलुस ने इससे पहले इफिसुस के प्राचीनों (ऐल्डरों) को बताया था (जो मिलेतुस में उससे मिले थे) कि ''मैं जानता हूं, कि तुम सब ... मेरा मुंह फिर न देखोगे।'' इस विचार की कि पौलुस इफिसुस में नहीं गया इससे अधिक सज़्भावना है कि वह गया परन्तु समय या परिस्थितियों के कारण वहां किसी प्राचीन से नहीं मिल पाया। पौलुस को तीमुथियुस का एक संदेश मिला (फिलिप्पियों 2:19-24) और वह तीमुथियुस से इफिसुस में ठहरने का आग्रह

करते हुए फिलिप्पी की ओर चला गया। तीतुस 1:5 के विपरीत, 1 तीमुथियुस 1:3 यह नहीं कहता कि पौलुस ने इफिसुस में काम पूरा करने के लिए तीमुथियुस को वहां *छोड़ दिया था।*

5. मकिदुनिया में रहते हुए, पौलुस ने शीघ्र ही इफिसुस के इलाके में लौटने की उम्मीद से, लेकिन यह जानते हुए कि उसे देरी हो सकती है, 1 तीमुथियुस लिखा (3:14, 15; 4:13)।
6. बाद में पौलुस ने मकिदुनिया में रहते हुए (शायद फिलिप्पी से) तीतुस को लिखा और अपनी यात्रा की योजनाएं बदल दीं। वह निकापुलिस (एपिरुस में, आयोनियन सागर के पूर्वी तट पर स्थित) से तीतुस को साथ ले जाना चाहता था, जहां पौलुस ने सर्दी का मौसम बिताने का निश्चय किया हुआ था। क्रेते में काम जारी रखने के लिए (तीतुस 3:12) उसने अरतिमास या तुखिकुस (इफिसियों 6:21, 22; कुलुस्सियों 4:7, 8) को भेजने का वायदा किया (या कम से कम उम्मीद)।
7. व्यापक बाहरी प्रमाण से सुझाव मिलता है कि पौलुस ने जैसा चाहा था वैसे ही स्पेन के लिए अपनी यात्राएं जारी रखीं (देखिए रोमियों 15:24, 28)।[6]
8. दिए गए प्रमाण के अनुसार स्पेन में जाने के बाद पौलुस कुरिन्थुस में रुककर और वहां अरिस्तुस को छोड़कर एशिया माइनर में लौट आया था। फिर वह करपुस के पास अपना बागा और चर्म पत्र छोड़कर त्रोआस में चला गया (2 तीमुथियुस 4:13, 20)। वहां से वह मिलेतुस गया जहां त्रुफिमुस को बीमार छोड़कर आया था (2 तीमुथियुस 4:20)।
9. मिलेतुस से रोम में किसी स्थान पर, पौलुस को थोड़े समय के लिए फिर से गिरफ़्तार कर कठोर कारावास में डाल दिया गया (2 तीमुथियुस 1:16, 17; 2:9; 4:14-18)। उसने अनुमान लगा लिया था कि अब उसके जीवन का अंत निकट है (2 तीमुथियुस 4:6-8)। सर्दियों से पहले तीमुथियुस के उसके पास आने की उम्मीद थी (2 तीमुथियुस 4:9-11, 21)। बेशक उसे यह पता नहीं था कि किन कठिन भौतिक परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा, पर उसका मन दृढ़ था (2 तीमुथियुस 4:18; देखें 2 कुरिन्थियों 4:16-5:1; फिलिप्पियों 1:21, 23)।

1 तीमुथियुस लिखने की तिथि (ऊपर दिए गए आंकड़ों के कारण) सामान्यतया 63 या 64 ईस्वी निर्धारित की जाती है, जिसमें थोड़ी देर बाद ही तीतुस के नाम लिखी पत्री भी शामिल है। दोनों पत्रियां मकिदुनिया में ही कहीं लिखी गई थीं।

विषय - वस्तु

1 तीमुथियुस के छह अध्यायों में विभिन्न शीर्षकों से परमेश्वर के वचन के (''परमेश्वर का वचन''; ''सच्चाई''; ''पवित्र शास्त्र'') कई हवाले मिलते हैं जिनमें विशेष आदेश,

ताड़नाएं और आज्ञाएं भी शामिल हैं जो तीमुथियुस को दी गई थीं। उस सेवा पर जो तीमुथियुस ने करनी थी यह जबर्दस्त ज़ोर और उसकी अगुआई के रूप में पवित्र शास्त्र का इस्तेमाल एक ऐसा संयोग बन जाता है जो इस अध्ययन की विषय वस्तु अर्थात परमेश्वर के पर्याप्त वचन से सुसमाचार प्रचारक के जीवन की व्याज़्या है।

ज़्योंकि यह वचन उस परमेश्वर की ओर से जो चाहता है कि सब लोग उद्धार पाएं (2:3, 4) एक अनन्त वाचा है (इब्रानियों 13:20, 21) और यह ईश्वरीय योजना उन प्रचारकों द्वारा ही दी जा सकती है जो उस वचन का प्रचार करते हैं (4:13-16; 1 कुरिन्थियों 1:21), इसलिए 1 तीमुथियुस ऐसा संदेश है जो सुसमाचार के हर प्रचारक के लिए है और सबको चाहिए कि वे इस पर विचार करें। यह संदेश परमेश्वर के घर, जो कि ''जीवते परमेश्वर की कलीसिया है'' (3:14, 15) में विश्वास से रहने वाले उन सब लोगों के लिए समयानुकूल भी है और असमय भी। यह पत्री मसीही लोगों के लिए संदेश है कि प्रभु के लिए उनका जीवन कैसा होना चाहिए (4:6-16)।

किसी भी प्रकार के अध्ययन में, लेखक द्वारा इस्तेमाल की गई व्यज़्तिवाचक संज्ञाओं अर्थात लोगों, स्थानों, और वस्तुओं के नामों के अर्थों का ज्ञान होना बहुत ही आवश्यक है। यह वह ढांचा होता है जिस पर कहानी या निर्देश बना होता है। किसी भी दूसरी पुस्तक की तरह बाइबल अध्ययन में भी इसका महत्व उतना ही है। 1 तीमुथियुस का अध्ययन करने से पहले, आइए इस पत्र में उल्लेखित लोगों, स्थानों और धारणाओं पर एक नज़र डालते हैं।

1 तीमुथियुस में लोग

तीमुथियुस

''तीमुथियुस के नाम जो विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र है: पिता परमेश्वर, और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह, और दया, और शान्ति मिलती रहे'' (1:2; re-edited edition, BSI)।

तीमुथियुस पन्द्रह या इससे अधिक वर्षों से पौलुस का एक छात्र, मित्र और बहुत ही सज़्माननीय सहकर्मी था। दो पत्रों में, पौलुस ने तीमुथियुस को ''विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र'' (1:2), ''मेरे पुत्र'' (1:18; 2 तीमुथियुस 2:1), और ''प्रिय पुत्र'' (2 तीमुथियुस 1:2) कहकर सज़्बोधित किया। प्रेरितों के काम में उसके नाम का छह बार उल्लेख आता है।[7] पहली बार उसका उल्लेख ''एक चेला'' के रूप में आता है जो उस समय लुस्त्रा में था जब पौलुस और सीलास दूसरी मिशनरी यात्रा पर वहां पहुंचे थे (प्रेरितों 16:1)। वहीं से तीमुथियुस पौलुस और सीलास के साथ जाने लगा था।

तीमुथियुस एक यहूदी था जिसकी मां तो यहूदिन थी परन्तु पिता यूनानी था। इसलिए अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा के अनुसार उसका खतना न होने पर उसे यहूदियों में काम करने की स्वतन्त्रता नहीं मिलती थी (उत्पज़ि 17)। धार्मिक नहीं बल्कि जातीय

कारणों से पौलुस को इस जवान यहूदी मसीही का खतना करना पड़ा था।[8] जब पौलुस ने थिस्सलुनीके और बिरिया के क्षेत्र से जाना था, तो तीमुथियुस सीलास के साथ वहीं रुका था, और दोनों ने निकट भविष्य में पौलुस से अथेने (या एथन्स) में मिलने का निर्णय किया था (प्रेरितों 17:14, 15)। योजना के अनुसार अथेने में उनके न पहुंचने पर पौलुस घबरा तो गया था, लेकिन कुरिन्थुस में आगे बढ़ गया जहां ये दोनों जवान अंत में पौलुस को मकिदुनिया की कलीसियाओं की स्थिति के बारे में उत्साहित करने के लिए वहां पहुंच गए (प्रेरितों 18:5)। बाद में, तीमुथियुस को इफिसुस से इरास्तुस के साथ मकिदुनिया भेजा गया (प्रेरितों 19:22)। उसके बाद, यूनान में वह पौलुस के साथ था।

पौलुस के विरुद्ध रचे गए एक षड्यन्त्र का पता तब चला जब समुद्र मार्ग से उसका फलस्तीन जाने का समय निकट आया। इसलिए, और लोगों को साथ लेकर तीमुथियुस को त्रोआस की ओर एजियन सागर के पार उससे पहले ही भेज दिया गया। वहां, यह दल पौलुस से फिर मिला था (प्रेरितों 20:4-6)।

पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया के नाम अपने पत्र में तीमुथियुस की बहुत प्रशंसा की। उसने लिखा, ''ज्योंकि मेरे पास ऐसे स्वभाव का कोई नहीं, जो शुद्ध मन से तुज़्हारी चिंता करे'' (फिलिप्पियों 2:20)।

जीवन के यदि अंतिम दिनों में नहीं तो अंतिम सप्ताहों में, पौलुस की सबसे बड़ी इच्छा तीमुथियुस को रोम में बुलाकर उससे मिलने की थी। उसने पौलुस की कुछ निजी वस्तुएं लाने के लिए और भविष्य के लिए निर्देश लेने आना था (2 तीमुथियुस 4:13)।

हुमिनयुस और सिकन्दर

''उन्हीं में से हुमिनयुस और सिकन्दर हैं जिन्हें मैं ने शैतान को सौंप दिया, कि वे निन्दा करना न सीखें'' (1:20)।

वे इफिसुस में रहने वाले झूठे शिक्षक थे। पौलुस ने उन्हें शैतान को सौंप दिया था। उनसे संगति तोड़ दी थी ''कि वे निन्दा करना न सीखें।'' 2 तीमुथियुस 2:17, 18 में भी हुमिनयुस का उल्लेख फिलेतुस के सज़्बन्ध में यह शिक्षा देते हुए किया गया है कि पुनरुत्थान तो पहले ही हो चुका है।

आदम और हव्वा

''ज़्योंकि आदम पहिले, उसके बाद हव्वा बनाई गई'' (2:13)।

आदम को हव्वा से पहले बनाया गया था। इसलिए उसके नेतृत्व को प्राथमिकता दी गई और हव्वा को उसके अधीन में रहना था। सामान्यतया स्त्री के पुरुष के नेतृत्व और सुरक्षा में रहने की इच्छा की जाती है।

पुन्तियुस पीलातुस

''मैं तुझे परमेश्वर को जो सब को जीवित रखता है, और मसीह यीशु को गवाह करके जिस ने पुन्तियुस पीलातुस के साम्हने अच्छा अंगीकार किया, यह आज्ञा देता हूं'' (6:13)।

तिबरियुस के शासनकाल में वह पलिश्तीन का हाकिम था। उसने यीशु को ईश्वरीय और राजा होने को मानने (यूहन्ना 18:35-37), लेकिन सरकार का विरोध करने से इन्कार करते सुना था। पौलुस ने यीशु के इस अंगीकार को उसके अनुयायियों को सौंपते हुए इसे ''अच्छा अंगीकार'' कहा।

1 तीमुथियुस में स्थानों का उल्लेख

''जैसे मैंने मकिदुनिया को जाते समय तुझे समझाया था, कि इफिसुस में रहकर कितनों को आज्ञा दे कि और प्रकार की शिक्षा न दें'' (1:3)।

इफिसुस

इफिसुस वह नगर है जहां तीमुथियुस को पौलुस के लिखे दो पत्र मिले थे। *इस शहर का व्यापारिक महत्व बहुत था।* समुद्र से कुछ मील दूर होने के बावजूद यह नगर, प्राचीन जगत की एक प्रमुख बंदरगाह थी। यह उस स्थान पर स्थित था जहां केस्टर नदी एजियन सागर में मिलती है। समुद्र की ओर जाने वाला यातायात केस्टर नदी के रास्ते नगर में पहुचता था।

इफिसुस में तीन बड़े राजमार्ग थे: (1) यूफ्रेत घाटी से जाने वाला मार्ग, कुलुस्से और लौदिकिया के रास्ते, (2) सारदीस के रास्ते गलतिया से आने वाला मार्ग, (3) दक्षिण में मियन्डर घाटी का मार्ग।

इफिसुस का राजनैतिक महत्व भी बहुत था। यह एक रोमी ''स्वतन्त्र नगर'' था, जिसका अर्थ यह है कि वहां पर सेना की कोई टुकड़ी नहीं रखी जाती थी, और नगर मुज़्यत: स्वशासित था। इस नगर को इतना सज़्मान दिया जाता था कि इसे ''एशिया का सर्वोज़म महानगर'' कहा जाता था। इफिसुस के अपने न्यायाधीश थे, जिन्हें स्ट्रेटेगोय कहा जाता था, और अपनी चुनी हुई नगरपरिषद थी, जिसे Boule (बोउल) कहा जाता था। नागरिकों की सभा को *एज़्क्लेसिया* कहा जाता था, जिसका अनुवाद संयोग से नये नियम में ''कलीसिया'' हुआ था। परन्तु प्रेरितों 19 अध्याय की अंतिम आयत में जहां नगर के मन्त्री ने इस समूह को तितर बितर कर दिया था, वहां इसका अनुवाद ''सभा'' हुआ है।

इफिसुस को ''न्यायालय का नगर'' भी कहा जाता था, जहां महत्वपूर्ण कानूनी मामले राज्यपाल के सामने लाए जाते थे। इसके अलावा, हर साल मई माह में पैन-आयोनियन खेलें भी करवाई जाती थीं। प्रांतीय (राज्य के) अधिकारी जिन्हें ''एशियार्क'' कहा जाता था इन खेलों का प्रबन्ध और इनका खर्च वहन करते थे।

बहुत से लोग जानते हैं कि इफिसुस का धार्मिक महत्व बहुत अधिक था। प्राचीन समय से वहां एक मन्दिर हुआ करता था। नगर में पहला मन्दिर बनाने वाले का पता नहीं है। दूसरा बड़ा मन्दिर लिदिया नामक इलाके के बहुत धनी राजा क्रोसस की सहायता से,

एशिया के नगरों ने बनाया था। लगभग 356 ई.पू. में सिकन्दर महान के जन्म वाली रात यह दूसरा मन्दिर जल गया था। बाइबल से हमें तीसरे मन्दिर का पता चलता है। यह यूनानियों की देवी अरतमिस को समर्पित था जिसे रोमी लोग डायना के नाम से जानते थे। सेकुलर इतिहास में इस मन्दिर को प्राचीन संसार के सात अजूबों में से एक माना जाता है।

अरतमिस का यह मन्दिर आज भी उन लोगों को बहुत प्रभावित करता होगा, जो बड़ी – बड़ी इमारतों को पसन्द करते हैं। यह मन्दिर राजा द्वारा भेंट किए गए 127 स्तज़्भों पर टिका हुआ था। उनमें से 36 पर चित्रकारी या बहुमूल्य धातु और पत्थरों से नज़्काशी की गई थी। पूरी इमारत 425 फुट लज़्बी, 220 फुट चौड़ी और 60 फुट ऊंची थी! इसकी छत देवदार और दरवाजे सरु की लकड़ी के बने थे। ये लकड़ियां मूल्यवान और टिकाऊ होने के कारण प्रसिद्ध हैं।

भव्य मन्दिर के अन्दर, एक बहुत बड़ी मूर्ति थी जिसे मूर्ति की उपासना करने वाले लोग अरतमिस की मूर्ति मानते थे। इसके बारे में कहा जाता था कि यह मूर्ति स्वर्ग से गिरी थी और काली थी, इसलिए यह टूटा हुआ तारा होगी। यह पलथी मारकर बैठी एक आकृति थी जो गोलाकार मूर्तियों से (टूटे तारे में बुलबुले ?) ढकी हुई थी। ज़्योंकि अरतमिस संतान की देवी थी, इसलिए लोगों का मानना था कि यह ''बुलबुले'' बहुत सी छातियां हैं। कहा जाता है कि इस मूर्ति के एक हाथ में गदा और दूसरे में त्रिशूल था, और इसका नीचे का हिस्सा अजीब व रहस्यमय चिह्नों से नज़्काशा गया था।

इफिसुस में लोगों के जीवन पर अरतमिस के मन्दिर के महत्व पर अत्याधिक बल देना कठिन होगा। मन्दिर उपासना का स्थान व शरण स्थल था (अर्थात, मन्दिर में भागकर आने वाले अपराधियों को यूं ही गिरज़्तार नहीं किया जा सकता था)। इसके अलावा, यह मूल्यवान वस्तुओं को सुरक्षित रखने के स्थान के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता था, आधुनिक बैंकों से भी बढ़कर। आखिर, यदि देवता किसी की सज़्पज़ि की सुरक्षा नहीं कर सकते तो कौन कर सकता था? इफिसुस के मामले में, मन्दिर एक बड़ी मंडी के रूप में भी प्रसिद्ध था। भाग्य को संवारने की उज़्मीद से, लोग अरतमिस की मूर्ति के आधार की नज़्काशी के प्रसिद्ध ''इफिसुस के अक्षरों'' की प्रतियां खरीदते थे।

इफिसुस संसार में सबसे अन्धविश्वासी नगरों में से एक था। जादू-टोने यहां की हर बात में पाए जाते हैं, जिस कारण यहां के बहुत से लोग टोने आदि का काम करते थे (प्रेरितों 19:18-20)।

इफिसुस के लोगों के चरित्र से निश्चय ही तीमुथियुस का काम प्रभावित होना था। पूरे एशिया में उन्हें चंचल, अनैतिक और अंधविश्वासी माना जाता था। ''रोने वाले दार्शनिक'' हेराज़्लिटुस ने जो इस नगर का रहने वाला था कहा था, कि इफिसुस की बुराई के कारण वह कभी मुस्कुराया नहीं। उसका कहना था कि मन्दिर की नैतिकताएं उन जन्तुओं के नीचे ही थीं और इफिसुस के लोग डूबने के योग्य ही थे।

इफिसुस की कलीसिया 53 या 54 ईस्वी के लगभग कुरिन्थुस से पलिश्तीन जाते हुए

पौलुस, अक़्विल्ला और प्रिस्किल्ला के इफिसुस में रुकने के समय आरज़्भ हुई थी। पौलुस ने वहां यहूदियों के आराधनालयों में बहस की थी (प्रेरितों 18:18-21)। बाद में, वहां कलीसिया में यहूदियों के बजाय यूनानियों की संज़्या अधिक हो गई थी।

लगभग पांच वर्ष बाद जब पौलुस को लौटने पर बारह चेले मिले जिन्होंने गलत ढंग से बपतिस्मा लिया था तो उसने उन्हें समझाया कि उनके बपतिस्मे में ज़्या कमी थी और उन्हें फिर से डुबकी का बपतिस्मा दिया (प्रेरितों 19:1-5)। इस मिशनरी यात्रा (उसकी तीसरी) में पौलुस ने तीन महीने तक आराधनालय में प्रचार किया। जब विरोध बहुत बढ़ गया तो उसने तुरन्नुस की पाठशाला में दो वर्ष तक वचन का प्रचार करता रहा (प्रेरितों 19:9, 10)।

पौलुस द्वारा इफिसुस में काम करने को महत्व देने का पता उसके द्वारा वहां बिताए गए समय से चलता है। इसके अतिरिज़्त, उसने इफिसुस से कुरिन्थियों के नाम पत्र लिखा: ''... मेरे लिए एक बड़ा और उपयोगी द्वार खुला है ...'' (1 कुरिन्थियों 16:9)। उस नगर में सुसमाचार के असर का इस तथ्य से संकेत मिलता है कि इफिसुस में विश्वास करने वालों ने एक ही बार चांदी के पचास हज़ार टुकड़े (लगभग सवा लाख रुपए) के मूल्य की जादू टोने की पुस्तकें जला दीं (प्रेरितों 19:18-20)।

लगभग 58 ईस्वी के निकट, जब पौलुस अंतिम बार यरूशलेम गया, तो उसने इफिसुस की कलीसिया के प्राचीनों से उन्हें भविष्य की घटनाओं से सावधान करने और उन्हें अलविदा कहने के लिए मिलेतुस में आकर उससे मिलने के लिए कहा। उसने वहां तीन वर्ष तक काम किया। इन अगुओं का उसके लिए विशेष महत्व रखते हैं। विदा होने से पहले उन्होंने मिलकर प्रार्थना की और रोये (प्रेरितों 20:17-38)।

इफिसुस की कलीसिया के नाम लिखे गए पहले पत्र के तीस वर्ष बाद, उनके नाम एक और पत्र लिखा गया जो यूहन्ना के प्रकाशितवाज़्य में शामिल है। इस पत्र में बताया गया कि इफिसुस की कलीसिया में ज़्या सही था और यह भी प्रकट किया कि इस कलीसिया का जोश कुछ ठण्डा पड़ गया था (प्रकाशितवाज़्य 2:1-7)।

मकिदुनिया

संक्षेप में मकिदुनिया का उल्लेख आता है जो वह प्रांत है जहां से पौलुस ने तीतुस और तीमुथियुस के नाम पहली पत्री लिखी थी (1:3)।

1, 2 तीमुथियुस और तीतुस में बार - बार वर्णित धारणाएं

अनुग्रह

अनुग्रह परमेश्वर द्वारा नर और नारी दोनों पर अपने प्रेम के कारण दिखाई जाने वाली वह कृपा है जिसके न तो वे हकदार हैं, न योग्य और न वे उसे कमा सकते हैं, जिससे उनका

उद्धार सम्भव हो जाए। जवान प्रचारकों के नाम पौलुस के पत्रों में अनुग्रह का उल्लेख बार - बार आता है (1 तीमुथियुस 1:2; 1:14; 6:21; 2 तीमुथियुस 1:2; 1:9; 2:1; 4:22; तीतुस 1:4; 2:11; 3:7, 15)। उद्धार का जो अनुग्रह से मिलता है, पौलुस के मन में इतना महत्व था कि उसने अपने दूसरे सभी पत्रों से अधिक इन पत्रों में परमेश्वर और मसीह को ''उद्धारकर्ज़ा'' कहा (कुल दस हवाले हैं, जिनमें से छह तीतुस के नाम पत्री के तीन अध्यायों में ही हैं)।

भले काम

पौलुस ने इन तीन पत्रों में भले काम के तेरह हवाले दिए जिनमें से सात तीमुथियुस के नाम दो पत्रों में मिलते हैं (1 तीमुथियुस 2:10; 5:10 [दो बार]; 5:25; 6:18; 2 तीमुथियुस 2:21; 3:17)। मसीही लोगों का उद्धार उनके भले होने या किसी शुभ कर्म के कारण नहीं हुआ है, फिर भी उनसे भलाई की तलाश और हर हाल में भले कार्यों में लगे रहने का आग्रह किया जाता है। पौलुस ने अन्य सज़्बन्धों में अज़्सर ''भले'' शज़्द का इस्तेमाल किया, उदाहरण के लिए ''अच्छे विवेक'' (1 तीमुथियुस 1:5, 19; इब्रानियों 13:18), ''अच्छी लड़ाई'' (1 तीमुथियुस 1:18; 6:12; 2 तीमुथियुस 4:7), ''अच्छा सेवक'' (1 तीमुथियुस 4:6) और ''अच्छा अंगीकार'' (1 तीमुथियुस 6:12, 13)।

राजा और राज्य

शायद यह देखकर कि नागरिकों के जीवन के प्रत्येक पहलू पर कैसर किस प्रकार अधिकार रखने का दावा करता था, पौलुस ने बार - बार और ज़ोरदार ढंग से यीशु के ''राजा'' और ''राजाओं का राजा'' होने की बात कही (1 तीमुथियुस 1:17; 6:15) और उसके ''राज्य'' (2 तीमुथियुस 4:1, 18) को जीवन का अंतिम लक्ष्य और गुण कहा। उसने कभी किसी अधिकारी पर आक्रमण नहीं किया (देखें तीतुस 3:1); वास्तव में, उसने उनके लिए प्रार्थना करने के लिए (1 तीमुथियुस 2:1, 2) ही कहा। दूसरी ओर उसने सांसारिक और आत्मिक को अलग रखा, ताकि मसीही लोग समझ जाएं कि उनके अंदर और उन पर शासन करने वाला केवल मसीह ही है।

जवानी

पौलुस चाहता था कि ये युवक जिन्हें उसने तैयार किया था, समझ जाएं कि उनकी जवानी के कारण उनके काम को कैसे देखा जाएगा। काम करने वाले एक बुज़ुर्ग की तुलना में उनके अपने काम को गंभीरता से न लेने का खतरा था (1 तीमुथियुस 4:12)। इस तरह के अपमान का सामना करना उनके लिए बहुत जोखिम भरा कार्य था। पौलुस ने उन्हें निर्देश दिया कि उनका जीवन और बातें ऐसे हों कि उनके सबसे बड़े आलोचक भी उनके चाल चलन से उनका सज़्मान करें (2 तीमुथियुस 4:1-5; तीतुस 2:15)।

पाद टिप्पणियां

[1]एल्बर्ट एम. वैल्स, जूनि., *इंस्पायरिंग कुटेशन्ज़* (नैशविल्ले: थॉमस नैल्सन पब्लिशर्स, 1988), 222. [2]1 और 2 तीमुथियुस और तीतुस की पत्री को ''पास्टरल एपिस्टल्स'' का ठप्पा लगाने का ढंग दुर्भाग्यपूर्ण है। जहां तक हम जानते हैं, न तो तीमुथियुस ने और न ही तीतुस ने कभी पास्टर (या अध्यक्ष अर्थात ऐल्डर) के रूप में सेवा की। इन पृष्ठों में बहुत से पास्टर्स अर्थात पासबानी के सिद्धांत तो हैं, परन्तु पॉल एंटन (1726) और थॉमस अज्विनस (1274) ने तीमुथियुस और तीतुस को ''पास्टर'' और ''पास्टरल'' शब्दों के साथ जोड़कर उन्हें प्रसिद्ध करके कुछ संगठनात्मक उलझन पैदा कर दी थी। पौलुस ने ये पत्रियां तीमुथियुस और तीतुस के नाम लिखी थीं, जो *सुसमाचार प्रचारक* अर्थात इवेंजलिस्ट थे (1 तीमुथियुस 1:2; 2 तीमुथियुस 4:5)। नये नियम की समस्त शिक्षा अध्यक्षों या प्राचीनों (देखें प्रेरितों 20:17, 28; 1 पतरस 5:1-3; तीतुस 1:5-7) के साथ पास्टर, या चरवाहा (यू.: *poimen*) को जोड़ती है। वास्तव में, इवेंजलिस्ट (या प्रचारक) का नाम पास्टर अर्थात रखवाले (इफिसियों 4:11) से अलग करके विशेष रूप से दिया गया है। इसलिए इन पत्रियों को, ''पास्टर'' शब्द से जोड़ने का एकमात्र कारण यही होगा कि इनमें अध्यक्षों या प्राचीनों की योग्यताओं के अलावा भी कुछ दिशानिर्देश दिए गए हैं कि सदस्यों को उनके काम के साथ कैसा सज़्बन्ध रखना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:1-12; 5:17-22; तीतुस 1:5-11)। फिर तो यह विशेष रूप से इवेंजलिस्टों अर्थात सुसमाचार प्रचारकों के लिए परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई पत्री है। [3]विलियम हैंड्रिज़्सन, *ए कमैन्ट्री ऑन 1 एण्ड 2 तिमोथी एण्ड टाइटस* (लंदन: द बैनर ऑफ़ ट्रुथ ट्रस्ट, 1964), 33-34. [4]मैरिल सी. टैनी, *न्यू टैस्टामेंट सर्वे* (लंदन: इंटरवर्सिटी फेलोशिप, 1961), 332-33. [5]थियोडोर ज़ाह्न, इन्ट्रोडज़्शन टू द न्यू टैस्टामेंट (एडिनबर्ग, स्कॉटलैण्ड, टी. एण्ड टी. ज़्लार्क, 1909), 2:10. [6]95 ईस्वी के लगभग रोम के ज़्लेमंट ने कुरिन्थियों के नाम एक पत्री लिखी जिसमें उसने भाग 5 में लिखा, ''हम अपने सामने उन अच्छे उदाहरणों को रखें जिनका सज़्बन्ध हमारी पीढ़ी से है। ईर्ष्या और द्वेष के कारण ... कलीसिया के अति धर्मी स्तज़्भों को सताया गया था ... पौलुस ने अपना नमूना देकर धैर्य से सहने के प्रतिफल की ओर ध्यान दिलाया। उसके बाद वह सात बार जेल गया ... पूर्व और पश्चिम में प्रचार करता रहा, ... जिसमें वह सारे संसार में धार्मिकता की शिक्षा देते हुए पश्चिम के दूरस्थ छोर तक पहुंच गया'' (जे. बी. लाइटफुट, *द अपोस्टलिक फ़ादर्स* [लंदन: मैकमिलन एण्ड कं. 1891; रीप्रिंट, ग्रैड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1967], 15)। अतिरिज़्त जानकारी हैंड्रिज़्सन, 27 में ज़्यूरेटोरियन कैनन, यूसबियुस, क्रिसोस्टोन, जेरोम में; और विलियम बार्कले, *द लैटर्स टू तिमोथी, टाइटस एण्ड फिलेमोन,* द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़, संशो. सं. (फिलाडेल्फिया: वैस्टमिंस्टर प्रैस, 1960), 14 में मिलती है। [7]नये नियम में तीमुथियुस का उल्लेख उन्नीस और बार मिलता है। [8]कई लोगों ने पौलुस पर असंगत होने का आरोप लगाया ज़्योंकि पहले उसने तीतुस का खतना करने से इन्कार किया लेकिन तीमुथियुस के मामले में रीति को पूरा किया। तीतुस एक यूनानी था। अब्राहम के साथ खतने की वाचा किसी यूनानी के यहूदी खतने के लिए नहीं हो सकती थी। ज़्योंकि परमेश्वर ने वह वाचा इब्रानियों के साथ और इब्रानियों के लिए ही बांधी थी। मसीही सुसमाचार में किसी के खतने की आवश्यकता नहीं थी। इसलिए ऐसे संस्कार के लिए तीतुस से कहने का कोई आधार नहीं था। व्यवस्था थोपने वालों के विरुद्ध यह एक प्रमुख प्रमाण बन गया। यह बताना कि पौलुस ने तीमुथियुस का खतना किया था इस वाज़्य के विरुद्ध कोई तर्क नहीं है। खतने के धार्मिक और जातीय दोनों महत्व थे। तीतुस के लिए तो इनमें से किसी का भी महत्व नहीं हो सकता था, परन्तु तीमुथियुस के लिए इसका जातीय महत्व हो सकता था। इस रोशनी में देखने से पौलुस के परेशान करने वाले कार्य बिल्कुल सुसंगत थे।